%%A. D. 1190‒1436

%%Ś. 1112‒1358

%%( From 1184—19-9-1264 A. D.)

%%p. 184

No. 120

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Śiṃhāchalam<1>

( S. I. I. Vol. VI. No. 726; A. R. No. 264 of 1896;

I. M. P. Vol. III, P. 1676, No. 82 )

Ś 1192<2>

(१।) स्वस्ति श्री शाकवर्षे नयन नव शशि-क्ष्मा-

(२।) मिते कात्तिके तद्दीपावल्यामदत्तान्न-

(३।) रहरिभवने हारितख्यातगोत्रो । गो-

(४।) पालो दीपदंडावपि खशरमिता-

(५।) श्चितसुख श्रीनृसिंहो दीपद्व द्वाय

(६।) गास्तावमरयतनुजो भ्रातरावाक्कं-

(७।) तारं ।। स्वस्ति श्री [।।] शकवर्षवुलु ११९२

(८।) गुनेंट्टि कात्तिकदीपावलिमहोत्स-

(९।) वमुन हरितगोत्रमुन अमरय-

(१०।) गोपालनि कोडुकुलु चित्तनगोपालु न-

(११।) रसिहगोपालुंडुनलु तम धर्म्मवु-

(१२।) गा श्रीनरसिहनाथुनिकि अखंड्द्दी-

(१३।) पमुलु रेंडु आचंद्रार्क्कमुगा

(१४।) चेल्लुटकु पेट्टिन मोदालु एभ-

<1. On the fourth pillar in the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 16th October, 1270 A. D.>

%%p. 185

(१५।) इ[न्नि] दीपदंडुलु रेंडु । तन-

(१६।) चेलियलु अनंत्तलक्ष्मीमिकिन्नि अदृष्टमु

(१७।) गानु ।। ई धर्म्मवु श्रीवैष्णवुल रक्ष [।।]

(१८।) श[त्रुणा]पि कृतो धर्म्मः पालनीयो मनीषि-

(१९।) भिः [।] शत्रुरे[व] हि शत्रु[ः]स्या[त्] धर्म्मः शत्रुर्ग्नक-

(२०।) स्यचित् ।। विरचितेयं पद्धतिः पडित-

(२१।) पेरुमांडिना ।। श्री श्री श्री [।।]